बाइबल टीचर

वर्ष 15 | अक्टूबर 2018 | अंक 11

सम्पादकीय

धर्म या उद्धार

आज संसार मं अनेकों धर्म है। सब धर्म अपनी शिक्षाओं को अधिक-से-अधिक आगे बढ़ाना या उनका प्रचार करना चाहते है। अनेक लोग सोचते हैं कि हमारा धर्म ही केवल सच्चा है। तथा यदि दूसरे धर्मों के लोग हमारे धर्म में आ जायें तो वे अवश्य उद्धार पा सकते हैं। परन्तु धर्म क्या है? यदि धर्म की परिभाशा दी जाये तो हम कह सकते हैं कि धर्म वह है जिसमें लोग धार्मिकता में होकर अनेकों प्रकार से परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं। कई लोग बहुत से ऐसे कार्य करते हैं जिससे वे अपने धर्म को प्रकट कर सके। अर्थात वे अन्य-अन्य तरीकों से उपासना करके परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं तथा अनेक बार ऐसी बातें करते हैं जो देखने में बड़ी विचित्र लगती है।

शायद आप अभी तक सोच रहे होंगे कि मैं भी आप से किसी धर्म के विषय में बात करूंगा अथवा अपने धर्म का प्रचार इस लेख के द्वारा करूंगा। लेकिन मैं आपको बता देना चाहता हूं कि मैं आपसे किसी धर्म के विषय में बात नहीं करने जा रहा। मैं प्रभु यीशु के विषय में और उस उद्धार के मार्ग के विषय में बात करूंगा जो कि नये-नियम में दर्शाया गया है। आज इस धार्मिक संसार में मनुष्य नये-नये धर्मों की खोज में है, तथा अनेक नये धर्मों की स्थापना हो रही है। मनुष्य परमेश्वर के पास पहुंचने तथा उद्धार पाने के नये नये तरीके उपयोग में ला रहा है। आप किस वस्तु की खोज में है? धर्म या उद्धार? जैसे कि पहले हमने देखा था कि धर्म वह है जिसमें मनुष्य परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए कुछ करता है। परन्तु उद्धार के विषय में जब हम देखते हैं तो बाइबल के द्वारा हमें पता चलता है कि उद्धार वह है जो र्स्वशक्तिमान परमेश्वर ने मनुष्य के लिए संभव कर दिया है। अनेक लोगों का विचार है कि वे बड़े भक्त है, अच्छे-अच्छे कार्य करते हैं और यही उनका धर्म है। बेशक वह आपका धर्म हो परन्तु उद्धार नहीं।

आज से लगभग उन्नीस सौ वर्ष पूर्व दयालु परमेश्वर ने मनुष्य की पाप की दशा पर दृष्टि की तथा उसके इधर-उधर भटकने की दशा को देखकर उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को इस पापी संसार के लोगों को उनके पापों से बचाने के लिये उद्धार की योजना बनाई। यीशु के इस संसार में आने से पहले उसके विषय में कई भविष्यद्वाणियां हो चुकी थी। यशायाह नामक भविष्यद्वक्ता ने भविष्यवाणी की थी कि

''इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।'' समयानुसार यह भविष्वाणी पूर्ण हुई तथा परमेश्वर का एक दूत गलील के नासरत नगर में एक भक्त कन्या के पास आया ''जिसकी मंगनी यूसफ नाम दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी। उस कुंवारी का नाम मरियम था। और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, प्रभु तेरे साथ है। वह उस वचन से बहुत घबरा गई और सोचने लगी, कि यह कैसे हो सकता है? स्वर्गदूत ने उससे कहा, हे मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। और देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा; और परम प्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा.... और उसके राज्य का अन्त न होगा। मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह क्योंकर होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परम प्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।'' इस घटना के पश्चात संसार के उद्धारकर्ता यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ ''कि जब उसकी माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई तो उनके इक्ट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। सो उसके पति यूसुफ ने, जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की। जब वह इन बातों के बारे में सोच ही रहा था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा हे यूसुफ दाऊद की संतान तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह पुत्र जनेगी तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उद्धार करेगा। इसके पश्चात यीशु मसीह बड़ा हुआ और सारे लोगों में प्रचार करता फिरा। लेकिन फिर उसका मृत्यु का समय भी निकट आ गया। उसकी मृत्यु के विषय में भविष्यवाणियां की गई थी कि वह मारा जायेगा तथा अपने लोगों का उद्धार करेगा।'' यशायाह ने प्रभु यीशु के ऊपर भविश्य में आने वाले दुखों का वर्णन किया, वे दुख जो उसको अपनी मृत्यु से पहले झेलने थे। तथा उसने लिखा था कि वह किस प्रकार से मारा जायेगा। इस प्रकार से यीशु की मृत्यु हुई, कि ''जब भोर हुई, तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की। और उन्होंने उसे बांधा और ले जाकर पीलातुस हाकिम के हाथ में सौंप दिया। हाकिम ने कहा, क्यों उसने क्या बुराई की है? परन्तु वे और भी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे ''वह क्रूस पर चढ़ाया जाए'' इस पर उसने यीशु को कोड़े लगाकर उनके हाथ सौंप दिया, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया।'' यह सब क्योंकर हुआ? इसका विशेष तथा महत्वपूर्ण कारण है पापी मनुष्य का उद्धार। दयालु परमेश्वर का पापियों के प्रति यह महान प्रेम था ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को

जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। (यूहन्ना 3:16-17)। पौलुस रोमियों कि पुस्तक में लिखते हुए कहता है ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। पवित्र शास्त्र के और भी अन्य पद हमें वही बताते हैं कि यीशु मसीह पापियों के लिए क्रूस पर मरा जिसके मारे जाने से पापी मनुष्य अपने पापों से छुटकारा पा सके। किन्तु यीशु केवल मरा ही नहीं तीसरे दिन अपने वायदे के अनुसार उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की तथा वह जी उठा। और लिखा है ''सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पोह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई। और देखो एक बड़ा भुईडोल हुआ क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र उजाले की नाई उज्जवल था। उसके भय से पहरूए कांप उठे, और मृतक समान हो गए। स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूढ़ती हो। वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था।'' (मत्ती 28:1-6)

वास्तव में प्रभु यीशु इस संसार के लोगों के पापों के लिए मारा गया। क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र था इसलिए उसने अपने पिता अर्थात परमेश्वर की इच्छा पूरी की। शायद आप सोचें कि यीशु मसीह केवल एक शिक्षक या एक धार्मिक गुरु था। अथवा वह एक अवतार के रूप में अपने धर्म का प्रचार करने इस संसार में आया था। चाहे लोग कुछ भी सोचें वास्तव में प्रभु यीशु जीवते परमेश्वर का पुत्र है और वह उनका उद्धार करने आया था। (मत्ती 16: 16)।

अब मनुष्य को धर्म की लालसा नहीं करनी चाहिए क्योंकि यीशु ने अपनी मृत्यु के द्वारा मनुष्य के उद्धार का मार्ग बना दिया है। आज मनुष्य को आवश्यकता है कि वह प्रभु यीशु को स्वीकार करे। धर्म में मनुष्य परमेश्वर को प्रसनन करने के लिए अनेक वस्तुएं उसको चढ़ाने के लिए लाता है परन्तु उद्धार पाने के लिए मनुष्य को परमेश्वर के सम्मुख बिल्कुल खाली हाथ आना चाहिए। यह कहते हुए कि प्रभु यीशु:

''जैसा मैं हु, बगैर एक बात,
पर तेरे लहु से हयात,
अब तेरे नाम से है उद्धार,
मसीह, मसीह मैं आता हूं।''

यहूदी लोग बड़े धार्मिक लोग थे। वे परमेश्वर के सम्मुख जानवरों की भेंटें चढ़ाया करते थे। यह सब परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए किया जाता था। परन्तु इस युग के लोगों के लिए एक बार यीशु के लहू की कुर्बानी हो गई। अब जानवरों की कुर्बानी की कोई आवश्यकता नहीं है।'' और बकरो और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। क्योंकि जब बकरों और बैलों का लोहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता के लिए पवित्र करती है। तो

मसीह का लोहू जिस ने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।'' (इब्रानियों 9:12:14)।

मित्रो, यदि हम वास्तव में उद्धार पाने के इच्छुक है, तो हमें धर्म शब्द को अपने मनों से निकालना होगा। क्योंकि यदि हमारा मन धर्मों की ओर लगा रहेगा तो हम धर्मों की ही खोज में लगे रहेंगे। आप शायद सोचें इससे अच्छा तो यह धर्म है या वो धर्म है, मुझे इस धर्म को स्वीकार कर लेना चाहिए। अर्थात अनेक लोगों का जीवन केवल धर्मों की खोज में ही बीत जाता है। विशेष बात यह है कि चाहे हम कितने भी धार्मिक हो यदि हमने प्रभु यीशु तथा उसके मार्ग को नहीं अपनाया है तो हम खोये हुए हैं। पवित्र बाइबल के दूसरे भाग में अर्थात नये नियम में ऐसे अनेकों व्यक्तियों के विषय में पढ़ते हैं जो धार्मिक तो थे परन्तु फिर भी खोये हुए थे, क्योंकि उन्होंने प्रभु यीशु तथा उसके मार्ग को नहीं अपनाया था। सबसे पहले हम देखते हैं उन 3,000 बहुदी लोगों के विषय में जिनके बारे में हम प्रेरितों 2 अध्याय में पढ़ते है। यह लोग धार्मिक थे, तब ही तो अपने वे उस बड़े अर्थात पिन्तेकुस्त के त्योहार को मनाने के लिए एकत्रित हुए थे। धार्मिक होते हुए भी वे लोग प्रभु यीशु के उद्धार से वंचित थे। सो उन लोगों ने जब प्रभु यीशु के विषय में सुना तो उन्होंने उस पर विश्वास किया तथा उसकी आज्ञाओं को मानकर बपतिस्मा लिया। तथा वे लोग उसी दिन प्रभु के द्वारा प्रभु की कलीसिया में मिलाये गये। (प्रेरितों 2:38-47)।

शाऊल के विष में हम पढ़ते हैं कि वह कितना धार्मिक मनुष्य था। यहुदी धर्म की पुस्तकों का अच्छा ज्ञान रखता था। लेकिन फिर भी वह खोया हुआ था। फिर हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार प्रभु की आवाज उसे दमिश्क के मार्ग पर सुनाई दी थी और वह किस प्रकार से अंधा हो गया। फिर उसे हनन्याह नामक मनुष्य के पास भेजा गया तथा उसके द्वारा उसने बपतिस्मा लिया और अपने पापों से वह बचाया गया। (प्रेरितों 9)। एक अन्य मनुष्य के विषय में हम पढ़ते हैं उसका नाम था कुरनेलियुस। इसके विषय में लिखा है कि ''वह भक्त था और अपने घराने समेत परमेश्वर से डरता था और यहूदी लोगों को बहुत दान देता था, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था (प्रेरितों 10:2,3)। परन्तु फिर वही बात आती है कि उसने अभी तक प्रभु यीशु को स्वीकार नहीं किया था। कुरनेलियुस तथा उसके घराने ने प्रभु यीशु की आज्ञा मानकर उसके नाम में बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों 10:46-48)। ऐसे ही हम लुदिया तथा उसके घराने के विषय में पढ़ते हैं कि वह भक्त स्त्री थी। परन्तु अभी तक उसने सुसमाचार अथवा प्रभु की आज्ञा को नहीं माना था किन्तु जब पौलुस ने उससे बातें की तब उसने तथा उसके घराने ने प्रभु की आज्ञा को माना और बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों 16:14-15)। कुरिन्थि लोगों के विषय में भी हम यह पढ़ते हैं कि वे धार्मिक थे। लेकिन जब उन्होंने पौलुस के द्वारा सुसमाचार सुना तो उन्होंने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 18:8)।

अभी जितने भी लोगों के विषय में हमने देखा यद्यपि वे सब धार्मिक थे किन्तु यीशु तथा उसके उद्धार से वंचित थे। यदि वे लोग यही सोचते रहते कि हम तो बड़े

भक्त है, धार्मिक है, परमेश्वर से डरते हैं और दान भी देते हैं, हमें प्रभु यीशु की कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने प्रभु यीशु के मार्ग को ठुकराया नहीं पर उसको मन से स्वीकार किया।

मेरे मित्रो, अब आपके सम्मुख एक बहुत आवश्यक प्रश्न है ''क्या आप किसी धर्म को चाहते हैं अथवा प्रभु यीशु के उद्धार को?'' यदि आप चाहते हैं कि आप उद्धार प्राप्त करें तो प्रभु यीशु को स्वीकार करें, लेकिन स्मरण रखिये जब आप प्रभु यीशु को ग्रहण कर लें तो यह न सोचें कि आपने किसी धर्म को ग्रहण किया है। क्या सोचा आपने? यदि आप वास्तव में उद्धार पाने के इच्छुक है तो तैयार हो जाइये निम्न आज्ञाओं को पूरा करने के लिए। प्रभु यीशु पर विश्वास करें, अपने पापों से पश्चात्ताप करें, प्रभु यीशु का अंगीकार करें तथा अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें, तथा आप प्रभु यीशु की कलीसिया के सदस्य होंगे। (यूहन्ना 8:24, इब्रानियों 11:6, प्रेरितों 17:30; 2:38; रोमियों 10:9-10; मत्ती 10:32 पतरस 3:21; मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38-47)। इन आज्ञाओं को मानने के पश्चात आप केवल एक मसीही होंगे। (प्रेरितों 11526, 26:28 तथा 1 पतरस 4:16)।

यदि इन बातों के विषय में कोई अन्य जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें अवश्य लिखिये।

मसीह के बलिदान से सारा जगत किस प्रकार उद्धार पाएगा?

सनी डेविड

अकसर हम छोटी-छोटी चीजों पर कोई खास ध्यान नहीं देते। पर जो वस्तुएं बड़ी होती हैं उन्हें हम महत्वपूर्ण समझते हैं। उदाहरण के रूप में यदि आप को कोई एक बोरी गेहूं दे दे तो उसे आप अवश्य घर में रख लेंगे। पर अगर कोई आप को दो-चार दाने गेहूं के दे, तो उन्हें आप फेंक देंगे। तौभी सच्चाई यह है, कि एक दाने में भी ऐसी क्षमता है कि वह सारे संसार का पेट भर सकता है। मान लें आप एक दाना गेहूं का बो देते हैं। कुछ ही समय में वह एक दाना अनेकों दोनों को पैदा करेगा। और ऐसे ही आप उन सभी गेहूं के दानों को भी बो देते हैं, तो उन से अनेकों अन्य दाने जन्म ले लेंगे। और यही क्रम यदि कुछ वर्षों तक चलता रहे तो कुछ ही वर्षों में इतना गेहूं हो जाएगा कि उस से दुनिया के सारे लोगों का पेट भरा जा सकता है। पर आरंभ में क्या था? गेहूं का केवल एक दाना। यानि एक छोटी सी चीज में भी ऐसी ताकत है, कि उससे सारा जगत प्रभावित हो सकता है।

सन् 1918 में लगभग सारे विश्व में एक बीमारी फैली थी, जिसे स्पैनिश फ्लू के नाम से जाना जाता था। इस से तेज बुखार आता था जो दिमाग में चढ़ जाता था और लोगों की मृत्यु हो जाती थी। इस भयानक बीमारी से विश्व भर में पौने दो साल के भीतर लगभग सवा दो करोड़ लोगों की जाने चली गई थी। अकेले भारत में ही

लगभग एक करोड़ लोग इस बीमारी के शिकार होकर मर गए थे। और यह भयंकर बीमारी एक छोटे से कीटाणु अर्थात एक वाइरस से शुरू हुई थी। जिसका आरंभ एक मुर्गी से हुआ था, जिसके भीतर वह वाइरस था। जिस व्यक्ति ने उस मुर्गी का मांस खाया था, वह कीटाणु यानि वाइयरस उस व्यक्ति के फेफड़े में चला गया था। और उसके खांसने से या बात करने से वह और लोगों में फैल गया था।

ऐसे ही आज हम एड्स के बारे में देखते हैं, जो भयंकर रूप से सारे जगत में फैलती जा रही है। और कहा जाता है, कि एड्स के सबसे ज्यादा रोगी आज भारत में ही पाए जाते हैं। हजारों लोग इस से मर चुके हैं, ओर आने वालों वर्षों में इस से लाखों लोगों के मरने की आशंका है। पर एड्स का आरंभ कैसे हुआ था? कहा जाता है, कि एड्स का वाइरस एक चिम्पैन्जी में था, जिसे अफ्रीका में मारकर किसी ने खा लिया था, और उसी व्यक्ति से यह वाइरस अन्य लोगों में फैल गया, और इसी तरह से एड्स की बीमारी सारे विश्व में आज महामारी का रूप धारण करती जा रही है।

और क्या ऐसे ही प्रत्येक बुरी आदत और बुरे काम और पाप का आरंभ नहीं होता? जब छोटे बचचे गाली देते हैं तो माँ-बाप कहते हैं कि अभी यह बच्चा है, बड़ा होकर समझ जाएगा। पर इसका परिणाम कया होता है? वही बच्चा बड़ा होकर बड़ी-बड़ी गंदी गालियां देने लगता है। एक सिगरेट लोगों को ''चेन स्मोकर'' बना देती है। थोड़ी सी शराब आगे चलकर मनुष्य को पियक्कड़ बना देती है। कोई नशा करने वाला नशे की आदत के साथ पैदा नहीं होता। कोई व्यक्ति जुआरी या हत्यारा पैदा नहीं होता। पर हर एक पाप, हर एक बुरे काम की शुरूआत एक छोटे से रूप में होती है। और फिर आगे चलकर वही बुरी आदत एक बड़ा रूप धारण कर लेती है; वही मनुष्य का चरित्र बन जाता है। और न केवल वही व्यक्ति उससे प्रभावित होता है, पर अनेकों अन्य लोग भी उसके परिवार में, और समाज में उसके प्रभाव के दायरे में आ जाते हैं। सो अकसर एक छोटी सी समझी जाने वाली चीज का महत्व बड़ा विशाल हो सकता है।

और इसी बात को ध्यान में रखकर अब इस से हम एक आत्मिक पाठ सीखेंगे। प्रभु यीशु ने एक बार अपने सुनने वालों से कहा था, कि यदि मैं पृथ्वी से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खीचूंगा। (यूहन्ना 12:32)। और जब यीशु वास्तव में क्रूस पर लटकाकर ऊंचे पर चढ़ाया गया था, तो उस समय कौन इस बात पर विश्वास कर सकता था, कि उस की मौत से सारा संसार सदा के लिये प्रभावित हो जाएगा? पर क्या आज विश्व में कोई ऐसा देश या जाति है जिस ने यीशु की मृत्यु का सुसमाचार न सुना हो? या जहां लोग यीशु में विश्वास कर के उसका अनुसरण न कर रहे हों? प्रभु यीशु ने कहा था, कि जब मैं पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा तो सब को अपने पास खीचूंगा। और कितना सच था यह कथन आज संसार के हर कोने में लोग मौजूद है जो मसीह यीशु को अपना मुक्तिदाता मानते हैं। क्योंकि यीशु ने कहा था, कि वह सारे जगत के पापों के लिये क्रूस पर लटकाकर मारा जाएगा। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है।

कभी-कभी कुछ लोगों को यह बात समझने में परेशानी होती है, कि मसीह की मृत्यु से सारा जगत उद्धार कैसे पा सकता है? पर क्रूस पर मसीह की मृत्यु वास्तव में परमेश्वर का एक महान कार्य था। वह उसी की ताकत और उसी को मर्जी से क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया था। परमेश्वर ने स्वयं ही अपने पुत्र को सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान किया था। बाइबल में एक जगह इस प्रकार लिखा हुआ है: ''क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है उस से तुम्हारा छुटकारा चांदी-सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ। उसका ज्ञान तो जगत की उत्पत्ति के पहले से ही जाना गया था, पर अब इस अंतिम युग में तुम्हारे लिये प्रकट हुआ है।'' (1 पतरस 1:18-20)। अर्थात जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये मसीह का मरना पहले से ही परमेश्वर की योजना में शामिल था। यानि इससे भी पहले कि पाप जगत में आता, और मनुष्य को नाश करता, परमेश्वर ने मनुष्य के लिये पाप से छुटकारा पाने का उपाय पहले ही से निर्धारित कर रखा था। और मसीह के पृथ्वी पर जन्म से सैकंड़ों वर्ष पूर्व जब परमेश्वर ने इब्राहीम को बुलाया था, तो परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा था, कि पृथ्वी के सारे कुल और सारी जातियां तेरे वंश के द्वारा आशीष पाएंगे (उत्पत्ति 12:2; 22:18)। और बाइबल के नए नियम में, गलतियों 3:16 में, पौलुस प्रेरित लिखकर कहता है, कि इब्राहीम का वह वंश मसीह था। क्योंकि मसीह का जनम मरियम से हुआ था और मरियम इब्राहीम के वंश से थी। और फिर वहीं 26 और 27 पदों में आगे लिखकर वह कहता है, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है। अब न तो कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास न स्वतंत्र; न कोई नर न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो। और यदि तुम मसीह के हो, तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।''

यानि परमेश्वर ने सारे जगत के सब लोगों के लिये पाप से मुक्ति पाने का एक ही साधन बनाया है - और वह है उसका पुत्र यीशु मसीह, जो सारे जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित करने को परमेश्वर की ही इच्छा से क्रूस पर लटकाकर मारा गया था और जब हम मसीह में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा मानकर उसे अपने ऊपर धारण कर लेते हैं, तो हम सब उसमें एक हो जाते हैं - अर्थात, पाप से उद्धार पाए हुए लोगों का, परमेश्वर का एक समाज। यानि ''मसीह की कलीसिया'' जिसमें जाति-पाति और किसी भी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं है।

क्या आप मसीह में हैं? क्या आप ने परमेश्वर की आज्ञा मानकर उसके पुत्र यीशु मसीह को अपने पापों का प्रायश्चित स्वीकार कर लिया है? यह बात बड़ी ही गंभीर है। क्योंकि इस बात का संबंध आपकी आत्मा से है। और मेरा विश्वास है, कि आप इस बात पर सारी गंभीरता के साथ विचार करेंगे। और न केवल आप विचार ही करेंगे, पर उसकी बात को मानकर आप उसकी इच्छा को भी अपने जीवन में पूरा करेंगे।

बाइबल कलीसिया के बारे में क्या कहती है?

जे. सी. चोट

''कलीसिया''

1. प्रश्न : कलीसिया क्या है?

''...और मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।'' (मत्ती 16:18)।

''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।'' (प्रेरितों 2:47)।

''मसीह की शांति जिसके लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे।'' (कुलुस्सियों 3:15)।

उत्तर: एक सही उत्तर को चुनिये:

☐ विचार-विमर्श करने वाला स्थान

☐ एक सम्प्रदाय

☐ ''बुलाए गए'' उद्धार प्राप्त परमेश्वर के लोग

2. किसने कलीसिया की स्थापना की?

यीशु ने कहा ''मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।'' (मत्ती 16:17, 18)

☐ मसीह यीशु ने

☐ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने

☐ प्रेरित पतरस ने

3. कलीसिया की शुरूआत कहां हुई?

''मसीह यीशु ने प्रेरितों से कहा, और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर यरूशलेम में ठहरे रहो।'' (लूका 24:49)

''उस दिन तक जब तक वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया।'' (प्रेरितों 1:2)

☐ रोम में ☐ लंदन में ☐ यरूशलेम में

4. कलीसिया की शुरूआत कब हुई थी?

''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। (प्रेरितों 2:1)

''...और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।'' (प्रेरितों 2:47)

☐ सन 606 इसवीं में

☐ पिनतेकुस्त के दिन, लगभग सन 33 इसवीं में

☐ सन 1500 इसवीं

5. कलीसिया की नींव किस पर हैं?

जब पतरस और प्रेरितों ने मसीह यीशु को परमेश्वर के पुत्र होने का अंगीकार किया, तब यीशु ने कहा, ''....इस पत्थर पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।'' (मत्ती 16:18)

पौलुस ने इसको ऐसे समझाया,

''क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता।'' (1 कुरिन्थियों 3:11)

☐ पतरस पर ☐ यीशु मसीह पर ☐ रोम के पोप पर

6. कलीसिया का नाम क्या है?

''...मैं अपने घुटने हमारे प्रभु यीशु मसीह के उस पिता के सामने टेकता हूं, जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है।'' (इफिसियों 3:14, 15)

''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।'' (रोमियों 16:16)

☐ मसीह की कलीसिया

☐ किसी व्यक्ति, विशेष का नाम

☐ मनुष्यों द्वारा बनाई गई, जो पवित्र शास्त्र में नहीं पाए जातीं

7. कलीसिया का सिर कौन हैं?

यीशु मसीह के बारे में बात करते हुए पोलुस कहता है, ''वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है।'' (कुलुस्सियों 1:18)

☐ किसी वार्षिक सम्मेलन का अधयक्ष ☐ मसीह यीशु ☐ रोम का पोप

8. कलीसिया में प्रवेश पाने का क्या तरीका है?

''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।'' (प्रेरितों 2:47)

☐ अपने स्वयं के किए फैसले से सदस्यता लेना

☐ दूसरे सदस्यों के समर्थन से चुनाव लड़कर सदस्यता लेना

☐ जो आज्ञा मानकर उद्धार पाते हैं वे स्वयं प्रभु द्वारा कलीसिया में मिला दिए जाते हैं

9. कलीसिया की स्थापना के लिए क्या दाम चुकाया गया था?

''...परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।'' (प्रोरितों 20:28)

☐ कुछ भी नहीं

☐ यीशु मसीह का लहू

10. कलीसिया की आराधना में परमेश्वर क्या चाहता है?

''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।'' (यूहन्ना 4:24)

☐ ईमानदार ओर विश्वसनीय हो

☐ आरधना सच्चे मन से और पवित्र शास्त्र की आज्ञाओं के अनुसार हो

11. कलीसिया का संगठन क्या है?

मसीह कलीसिया का सिर है।

''और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणी ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।'' (इफिसिया 1:23, 23)

और अनुभवी-कलीसिया के कार्य की जानकारी रखने वाले, प्राचीन और सेवक कलीसिया का कार्य करें। (1 तीमुथियुस 3; तीतुस 1)

☐ पोप ☐ सेवक ☐ प्राचीन और सेवक

12. कलीसिया का क्या कार्य है?

''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।'' (मरकुस 16:15)

''अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें।'' (याकूब 1:27)

☐ मनोरंजन के स्थान की तरह चलाना

☐ सुसमाचार प्रचार करना और जरूरतमंदों की सहायता करना

13. कलीसिया का अंतिम परिणाम क्या होगा?

''इसके बाद अंत होगा, जब वह राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा।'' (1 कुरिन्थियों 15:24)

☐ यह मर जाएगी

☐ यह पृथ्वी पर मसीह के साथ एक हजार वर्ष तक राज्य करेगी

☐ परमेश्वर को सौंप दी जाएगी

इन पवित्र वचनों का अध्ययन करें और उनका पालन करें और मसीह और उसकी कलीसिया को जाने और सच्ची कलीसिया का सदस्य बने।

अनुवादक: भाई फैरल

नोट : आप इन प्रश्नों के उत्तर हमें भरकर भी भेज सकते हैं। बाइबल के जो पद दिये गये हैं उन्हें ध्यान से पढ़ें और उत्तर लिखकर हमारे पते पर भेज दीजिये। सही उत्तर भेजने वाले को एक पुस्तक भेजी जायेगी। पुस्तक का नाम है - ''मृत्यु के बाद फिर क्या?''

हमारा परमेश्वर ऐतिहासिक है

जेम्स ई. प्रीस्ट

सृष्टिकर्ता के रूप में, परमेश्वर ने हमारे रहने का संदर्भ उपलब्ध कराया। हम पृथ्वी के हैं। परमेश्वर ने हमारे लिए एक आदर्श स्थान का प्रबंध किया जिसमें हम उसके, एक दूसरे के और प्रकृति के साथ मिलकर रह सकें। यह "पृथ्वी पर स्वर्ग" पाप के संसार में प्रवेश करने पर विलुप्त हो गया था। पाप के कारण वह प्रथम मानव दंपत्ति परमेश्वर से दूर हो गया था। पृथ्वी के कुछ प्रतिकूल लक्षण दिखाई देने लगे जिससे उनके लिए जीवन कठिन हो गया था। शैतान क्रुद्ध हो गया। परमेश्वर और शैतान के बीच का बड़ा युद्ध और भी बढ़ गया।

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने साथ पूर्ण संगति का मार्ग चुनने का ढंग उपलब्ध कराया था। उस मार्ग का जोखिम वास्तविक था। उस सम्बंध को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक था। ऐसा न होने पर, पसंद चुनने की उनकी योग्यता व्यर्थ और बेकार हो जानी थी ओर यह संबंध मशीन की तरह, रोबोट जैसा अर्थात दास बनाने जैसा होता। आदम और हव्वा ने एक भयंकर भूल कर दी। उन्होंने जान बूझकर, गलत पसंद चुनी। उसके परिणाम अवाक कर देने वाले थे और कई तो उसी समय मिल गए थे। जीवन दाता आत्मा का विरोध हुआ था जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था। जिस दिन उन्होंने पाप किया था उसी दिन उन्हें उससे अलग कर दिया गया था। मृत्यु का अर्थ ही जुदाई है। आदम और हव्वा को जीवन के वृक्ष से दूर कर दिया था; इसलिए उनके लिए शारीरिक मृत्यु निश्चित थी।

हम कहते हैं, "यह तो बहुत बुरा हुआ।" हमें उन पर कितनी ही दया आती है। परन्तु हमें अहसास होना चाहिए कि यह कहानी का अंत नहीं है। उनके पाप के परिणाम केवल उन तक ही सीमित नहीं थे। जिस प्रकार झील के खड़े पानी में स्थिर फैंकने पर पानी की तरंगें किनारे तक पहुंच जाती हैं, उसी प्रकार उनके पाप के परिणाम हम तक पहुंचते हैं। पाप, दण्ड और मृत्यु सब मनुष्यों तक पहुंच चुके हैं। "इसलिए कि सबने पाप किया है ओर परमेश्वर की महिमा से रहित है" (रोमियों 3:23)। "इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिए कि सब ने पाप किया" (रोमियों 5:12)। "इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ" (रोमियों 5:18क)। हम भी, जो जिम्मेदार हैं अदन के उस "बाग के बाहर" खड़े हैं। अनुग्रह से उनका गिरना हमारे गिरने का भी कारण बना था। परमेश्वर से उनकी जुदाई उससे हमारी जुदाई का कारण बनी। हम परमेश्वर के सामने खड़े होकर यशायाह की तरह पुकारते हैं, "हाय! हाय! मैं नाश हुआ" (यशायाह 6:5क)।

क्या हमें आशा नहीं है? क्या हम शैतान के घृणित अजायबघर में लगने वाली वस्तुओं में से एक बनने वाले हैं? क्या हम अपने समान को सदा तक अपने साथ रखने के परमेश्वर के प्रयास की असफलता का अनन्तकाल का प्रमाण होने वाले हैं? ये सब प्रश्न हैं तो बड़े गंभीर, परन्तु हम एक लय में जोर देकर इनका उत्तर दे सकते हैं, "नहीं।" हमें उम्मीद छोड़ने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्वर ने यह सब हम पर नहीं छोड़ा है। हम वास्तव में परमेश्वर की विजय को प्रमाणित और असफलता के किसी भी विचार को खारिज कर सकते हैं। ये बातें तो उत्साह बढ़ाने वाली है, परन्तु क्या उनका कोई वास्तविक अर्थ भी है? क्या इनका कोई आधार है? क्या भरोसा है कि यह हमारी कोरी कल्पना ही नहीं है? इसका उत्तर देने के लिए केन्द्र बिन्दु किसी और बात को बनाना होगा। इसका उत्तर हमें अपने आप से नहीं बल्कि परमेश्वर से पूछना चाहिए।

पिछले पाठ में हमने परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य पर विचार किया था। हमने उसकी बुद्धि, उपस्थिति ओर सामर्थ के कामों पर विचार किया था। हमने यह भी

देखा था कि उसने मनुष्य को अपनी संगति में रखने के लिए बनाया था। यह सब हमने उसके सृजनात्मक कार्य में देखा था। इसके अतिरिक्त, हमने "पृथ्वी पर स्वर्ग" के एक नमूने के रूप में इस संगति का संदर्भ देखा था। यह निष्कर्ष निकालना भयंकर भूल होगी कि हर बात का अंत असफलता में हुआ। हम निर्णायक तथ्यों को अनदेखा कर रहे होंगे कि परमेश्वर न केवल सृजनात्मक ही है बल्कि वह ऐतिहासिक भी है। इतिहास में किया गया उसका कार्य हमारे लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना सृष्टि को बनाने में किया उसका कार्य। पहली बात तो यह कि यदि उसने हमें नहीं बनाया होता, तो हमारा अस्तित्व ही न होता। दूसरा, यदि वह सृष्टि के अपने इतिहास में सक्रिय न होता, तो हम नाश हो गये होते।

हमें कैसे पता लग सकता है कि परमेश्वर इतिहास में काम कर रहा है? इसका पता हमें वैसे ही चलता है जैसे सृष्टि को बनाने में उसके कार्य का। सृष्टि उसकी हस्तकला को प्रकट करती है; जबकि इतिहास उसके भाग लेने को। बाइबल में हमें परमेश्वर के सृजनात्मक तथा ऐतिहासिक कार्य दोनों का ही वर्णन मिलता है।

इतिहास के बाहर परमेश्वर

बाइबल के लिए परमेश्वर को ऐतिहासिक रूप से देखने से बढ़कर कोई आधार नहीं है। परमेश्वर समय के साथ-साथ अनन्तकाल में भी रहता है। आइए समय को अनन्तकाल के सागर में एक पनडुब्बी की तरह देखें। हम एक पनडुब्बी में रहते हैं। हम इस समय केवल उस छोटे से बर्तन में मिली जगह में बंद हैं। उस पनडुब्बी के अन्दर इतिहास रचा जा रहा है। परन्तु, परमेश्वर न केवल उस पनडुब्बी (समय) में ही है, बल्कि वह समुद्र (अनन्तकाल) में भी है। पनडुब्बी में उसके कार्य समुद्र में उसके परिपेक्ष्य से लिए जाते हैं। हमारे लिए इन बातों के बड़े अर्थ हैं।

पहला, हमारे पास तो उसका परिप्रेक्ष्य नहीं है इसलिए हमें उसके कार्यों की हर बार समझ नहीं आती या हम उन्हें देख नहीं पाते हैं। दूसरा, जैसे सृष्टि में उसके कार्य को अंतिम परिणाम में देखा जा सकता है, वैसे ही उस जहाज को चलाने के ढंग से इतिहास में उसकी उपस्थिति को देखा जा सकता है (भजन 19:1)। तीसरा, जैसे सामान्य प्रकाशन (प्रकृति) तथा विशेष प्रकाशन (बाइबल) में हम परमेश्वर के सृजनात्मक कार्य को देख सकते हैं, वैसे ही हम उसके ऐतिहासिक कार्य को भी देख सकते हैं। हो सकता है कि हमारे लिए सामान्य इतिहास में उसके कार्य को पहचानना कठिन हो, परन्तु अपने चुने हुओं के साथ उसके व्यवहार के बाइबल के वृत्तांत में विशेष रूप से समझाया गया है। इसलिए इतिहास में सक्रिय परमेश्वर पर विचार करने के लिए हम बाइबल के पास जाते हैं।

परमेश्वर इतिहास के भीतर

बाइबल हमें अद्भुत बातों की जानकारी देती है। हमें पता चलता है कि इतिहास उन शृंखलाबद्ध घटनाओं से कहीं बढ़कर है। इसमें एक उद्देश्य दिखाई देता है। हमारे लिए परमेश्वर का संदर्भ पहले एक सृष्टि का संदर्भ था। अब यह एक ऐतिहासिक संदर्भ है। पहले संदर्भ के पाप से गंदा होने के कारण परमेश्वर ने उसे हम पर नहीं

छोड़ा। दूसरा संदर्भ हमें पाप से बचने का अवसर देता है। इसलिए इतिहास को प्रायः 'उद्धार का इतिहास' कहा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि इतिहास की हर बात में उद्धार है बल्कि इसका अर्थ यह है कि इतिहास में भी उद्धार के लिए परमेश्वर के पास उद्देश्य है।

उद्धार के उद्देश्य को कई बार परमेश्वर द्वारा अपनी महान परिकल्पना को पूरा करने के लिए इतिहास में लोगों को निर्देश देने में देखा जाता है। परमेश्वर ने नूह को, अपने परिवार और सब प्रकार के जीवों को बचाने के लिए एक बड़ा जहाज बनाने का निर्देश दिया था। निश्चय ही, नूह और उसके परिवार के लिए यह एक शुभ समाचार था, परन्तु मनुष्य जाति के लिए यह और भी अच्छा समाचार था। बुराई का पेट साफ कर दिया गया था और जीवन को बचा लिया गया था (उत्पत्ति 6:1-9:17)। परमेश्वर ने नूह को बचाया, परन्तु उसके पास इससे भी बड़ी योजनाएं थी।

परमेश्वर ने अब्राम को अपना घर व अपने लोग छोड़कर एक ऐसे देश में जाने के लिए कहा जिसे वह जानता नहीं था। परमेश्वर ने इस व्यक्ति को ऐसा असाधारण कार्य करने के लिए क्यों कहा? परमेश्वर की यह योजना थी कि अब्राम, जिसका अर्थ "महिमा प्राप्त पूर्वज" था, इब्राहीम अर्थात "बहुतों का पूर्वज" बने और उसके द्वारा पृथ्वी की सभी जातियां आशीष पाएं। इब्राहीम इब्रानी अर्थात इब्रानी लोगों का पिता बन गया (उत्पत्ति12:1-4; 14:13; यशायाह 41:8), और अन्ततः प्रत्येक व्यक्ति जो यीशु को मसीह मानकर उसके आगे सम्पर्ण करके इब्राहीम का वंश बने (गलतियों 3:26-29)। इतिहास की दिशा परमेश्वर के हाथों में थी।

इब्राहीम के परपौत्र यूसुफ का जीवन महत्वपूर्ण ओर मनमौजी रहा था। किसके मन में आया होगा कि कनान के एक खानाबदोश परिवार का सरदार फिरौन की सेना के सेनापति के घर गुलाब बन जाएगा। किसे पता था कि यह इब्रानी लज्जित होगा और उसे कैद किया जाएगा, परन्तु अन्त में मिसर में, फिरौन के महत्वपूर्ण पद पर विराजमान होगा? अंत में क्या कोई भविष्यवाणी कर सकता था कि यूसुफ परमेश्वर के लोगों अर्थात इब्रानियों को बचाने के लिए आएगा।

इतिहास में परमेश्वर को कार्य करते देखना सामान्यतः असंभव होता है। परन्तु हमें उसका पूर्वबंध दिखाई नहीं देता तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह काम नहीं कर रहा है। परमेश्वर का उद्देश्य यूसुफ को बचाने से बढ़कर उसे दिशा देने का था (उत्पत्ति 45:4-15)। यह अपने लोगों को संभाले रखने और उन्हें बढ़ाने के लिए था।

एक के बाद एक घटनाओं से मिसर की शान की मिट्टी में मिला दिया गया था। इब्रानी शिशु मूसा को जन्म लेते ही मृत्यु मिलने वाली थी, क्योंकि सभी इब्रानी नर बच्चों को मार डालने की आज्ञा थी। वह परमेश्वर की योजना के अनुसार एक असंभावनीय घटना में मृत्यु से बच गया और नील नदी में फिरौन की बेटी को मिल गया। इब्रानी दासों के इस पुत्र का पालन-पोषण राजा के महल में हुआ था यहूदी इतिहासकार जोसेफस और मसीही लेखक टरटुलियन दोनों ने ही मूसा के बारे में लिखा है। उनका दावा था कि मूसा मिसरी सेना में एक बड़ा जरनैल था और उन्होंने इथियोपियन

लोगों पर उसकी सैनिक विजय का वर्णन किया। बाद में मूसा सीनै प्रायद्वीप में भाग गया और वहाँ पर अस्सी वर्ष की आयु तक संसार के मामलों से दूर रहा।

जंगल में, उसे परमेश्वर की ओर से उसके लोगों को मिसर से छुड़ाने के लिए निर्देश मिला था। एक चरवाहे द्वारा मिसर के फिरौन से यह कहने की कल्पना कीजिए कि उसे क्या करना चाहिए। फिरौन ने ढीठ होकर अपने लाखों गुलामों को छोड़ने से इंकार कर दिया। परन्तु देश में बड़े कष्ट और गड़बड़ी और हर मिसरी के घर में शोक होने के कारण उसे झुकना पड़ा। इब्रानी लोग मिसर की दासता से छूट गए और सीनै पहाड़ पर एक स्वतंत्र जाति बन गए। इतिहास की दिशा बदल गई थी। एक बार फिर, एक ऐतिहासिक परमेश्वर ने अपनी सामर्थ व पूर्वबंध को दिखा दिया था (निर्गमन 3-20)।

यहोवा के काम बड़े हैं
जितने उनसे प्रसन्न रहते हैं, वह उन पर ध्यान लगाता है।
उसके काम विभवमय और ऐश्वर्यमय होते हैं
और उसका धर्म सदा तक बना रहेगा।
उसने अपने आश्चर्यकर्मों का स्मरण कराया है;
यहोवा अनुग्रहकारी और दयावन्त है।
उसने अपने डरवैयों को आहार दिया है;
वह अपनी वाचा को सदा तक स्मरण रखेगा।
उसने अपनी प्रजा को अन्य जातियों का भाग देने के लिए,
अपने कामों का प्रताप दिखाया है।
सच्चाई और न्याय उसके हाथों के काम हैं;
उसके सब उपदेश विश्वासयोग्य हैं ....
उसने अपनी प्रजा का उद्धार किया है;
उसने अपनी वाचा को सदा के लिए ठहराया है।
उसका नाम पवित्र और भययोग्य है।

(भजन संहिता 111:2-9)।

सब कुछ प्रभु के नाम में करो

डेविड एंगुईश

''प्रभु के नाम में'' कलीसिया की गतिविधियां

पापियों को उद्धार की पेशकश का दान केवल यीशु के अधिकार से दिया जा रहा है। किसी का उद्धार तभी हो सकता है जब वह यीशु द्वारा स्थापित शर्तों को पूरा करता है, जिसके पास सारा अधिकार है। वही अधिकार उद्धार के बाद मसीही लोगों के जीवनों में दिया जाता है। उद्धार के विशेष कार्यों और किए जाने वाले के संबंध में प्रयुक्त ''के नाम में'' वाली भाषा ही मसीही गतिविधियों के सम्बंध में नये नियम में इस्तेमाल की गई है।

पौलुस ने कुरिन्थिस के मसीही लोगों को ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से'' (1 कुरिन्थियों 1:10) आपस में एक होने के लिए बहते हुए उनमें पाई जाने वाली फूट के लिए उन्हें डांटा। उन्हें अपने पिता की पत्नी के साथ अवैध सम्बध में शामिल व्यक्ति का सामना यह करते हुए करने को कहा कि उस व्यक्ति को ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से शैतान के सपुर्द कर दो (1 कुरिन्थियों 5:4)। इफिसियों 5:17:20 में पौलुस ने पाप के पुराने जीवन से नये जीवन में अन्तर बताया। (इफिसुस के लोगों से अपने परमेश्वर के निकट आने और पवित्र आत्मा से भरपूर होने को कहा। उसकी आज्ञाओं में से एक यह होती थी ''सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।'' (आयात 20)। थिस्सलुनीके की कलीसिया को भी ऐसा ही निर्देश दिया गया। उन्हें ऐसे सुस्त भाइयों का सामना करना पड़ रहा था ''जो अनुचित चाल चलते, और जो शिक्षा उन्होंने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करते'' थे (2 थिस्सलुनीकियों 3:6)। पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से ऐसे भाइयों से अलग रहने को कहा।

नया नियम बार-बार मसीही लोगों को कलीसिया में किए जाने वाले कामों में यीशु का अधिकार रखने की आवश्यकता को दिखाता है। उस सच्चाई की सबसे अधिक स्पष्ट बात कुलस्सियों 3:17 में है। पौलुस ने यहां लिखा है, ''वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।''

पौलुस कह रहा था कि कलीसिया में की जाने वाली सब बातें यीशु के अधिकार से होनी चाहिए। इस वाक्यांश का अर्थ यहां ''जो भी कर सको'' हो सकता है। अपने विश्वास को व्यवहार में लाने के लिए हम जो कुछ भी आवश्यक समझते हैं वह यीशु के अधिकार के अधीन होना चाहिए। पौलुस ने सिखाया कि ''वचन से या काम'' में हम जो भी करते हैं वह यीशु के अधिकार से होना चाहिए। जोर देने के लिए उसने ''सब'' शब्द को दोहराया। उसने घोषणा की कि वचन या काम में, जो कुछ भी करते हैं वह ''प्रभु यीशु मसीह के नाम से'' होना चाहिए।

कुलुस्सियों की पूरी पुस्तक में पौलुस ने सामान्य रूप में सृष्टि में और कलीसिया के सिर के रूप में यीशु की प्राथमिकता पर ध्यान दिया (कुलस्सियों 1:15-20)। उसने विश्वास की अन्य प्रणालियों के ऊपर उसके अधिकार, विशेषकर मानवीय फिलासफी और मूसा की व्यवस्था की बात करते हुए (कुलुस्सियों 2:8-23)। उसकी ओर ध्यान दिया। मसीह के श्रेष्ठ होने के कारण कुलुस्सियों 2:12 में दिया है, जहां पौलुस ने मसीह लोगों को याद दिलाया कि वे ''उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।'' इस तथ्य के प्रकाश में, उन्हें नये लोगों के लिए जीना था पर झूठे शिक्षकों से गुमराह नहीं होना था (कुलुस्सियों 3:1-11)।

मैं मसीह की कलीसिया का सदस्य क्यों हूं? क्योंकि इसे बनाने का स्थान पवित्र शास्त्र के अनुसार था - यरूशलेम

लिरॉय ब्राउनलो

1. पवित्र शास्त्र में बताए स्थान में नहीं बनी कलीसिया पवित्र शास्त्र वाली कलीसिया नहीं है: मसीह की कलीसिया का सदस्य होने का एक और कारण यह है कि इसकी स्थापना यरूशलेम में हुई थी, जिसे पवित्र शास्त्र में कलीसिया के आरंभ होने का स्थान बताया गया है। किसी के लिए कलीसिया का सदस्य होना आवश्यक है, जिसकी स्थापना पहले लंदन या न्यूयॉर्क में हुई थी, वह मसीह का कलीसिया का सदस्य होने का दावा नहीं कर सकता; क्योंकि मसीह की कलीसिया का आरंभ लंदन या न्यूयॉर्क में नहीं हुआ था। पवित्र शास्त्र के अनुसार कलीसिया का सदस्य होने के लिए उस कलीसिया का सदस्य होना आवश्यक है, जिसकी स्थापना पवित्र शास्त्र द्वारा बताए गए स्थान में हुई थी।

2. कुछ पद, जो इसकी स्थापना की ओर संकेत करते हैं: (1) पहले हम यशायाह की भविष्यवाणी देखेंगे: "अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे। और बहुत देशों के लोग आएंगे और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा" (यशायाह 2:2, 3)। इस भविष्यवाणी से सबसे पहले तो हमें यह पता चलता है कि यहोवा का भवन यरूशलेम में बनाया जाना था। फिर यह कि यहोवा का भवन ऊंचा किया जाता था और सब जातियों ने इसकी ओर बहना था। तीसरा, इसके बनाए जाने का समय अंत के दिन होना था। पौलुस ने "परमेश्वर की कलीसिया है, ..." की बात की है (1 तीमुथियुस 3:15)। सो यहोवा का भवन कलीसिया को ही कहा गया है, और इस पद से हमें इसके कब और कहाँ अर्थात अंत के दिनों में यरूशलेम में बनने का पता चलता है।

(2) मीका 4:1, 2 में लगभग ऐसी ही भविष्यवाणी पढ़ने को मिलती है।

(3) जकर्याह ने भी भविष्यवाणी की थी कि प्रभु का घर कलीसिया यरूशलेम में बनाई जानी थी: "इस कारण यहोवा कहता है, अब मैं दया करके यरूशलेम को लौट आया हूं; मेरा भवन उस में बनेगा, और यरूशलेम पर नापने की डोरी डाली जाएगी, सेनाओं के यहोवा की यही वाणी है" (जकर्याह 1:16)। सो एक बार फिर पवित्र आत्मा ने सिखाया कि कलीसिया का आरंभ यरूशलेम में ही होना था।

(4) विश्वव्यापी आज्ञा देते हुए, यीशु ने सिखाया कि इसके आरंभ होने का

स्थान यरूशलेम ही था, "यों लिखा है: कि मसीह दुख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो" (लूका 24:46-49)। हम देखेंगे कि (1) अपने मन फिराओ तथा पापों की क्षमा का प्रचार आरंभ होने से पहले मसीह ने दुख उठाना था और मुर्दों में से जी उठना था। (2) इस संदेश का प्रचार यरूशलेम से आरंभ होना था। (3) उन्होंने तब तक यरूशलेम में रहना था, जब तक उन्हें ऊपर से शक्ति नहीं मिलनी थी। यीशु ने पहले भी प्रेरितों को यह सामर्थ देने की प्रतिज्ञा की थी, जो उन्हें ऊपर से मिलनी थी। यूहन्ना 14:26; 15:26, 27:7, 8 से स्पष्ट है कि सहायक अर्थात पवित्र आत्मा मसीह के जाने से पहले नहीं आना था, और पवित्र आत्मा ने आकर कुछ काम करने थे- प्रेरितों को सब बातें सिखाना, उन्हें याद दिलाना कि यीशु ने उनसे क्या कहा था और संसार को पाप के विषय में निरुत्तर करना। यही वह सामर्थ थी, जिसे पाने के लिए प्रेरितों को यरूशलेम में ठहरने की आज्ञा दी गई थी।

3. इन बातों का पूरा होना: (1) पवित्र आत्मा ने मसीह के आने के बाद ही आना था (यूहन्ना 16:7)। प्रेरितों ने उसे ऊपर जाते और आंखों से ओझल होते देखा (प्रेरितों 1:9)।

(2) प्रेरितों को यरूशलेम में ठहरने की आज्ञा दी गई थी (लूका 24:49)। प्रभु को ऊपर उठाए जाते देखने के बाद प्रेरित यरूशलेम में (प्रेरितों 1:12) एक ठहराए हुए स्थान पर वापस आ गए, जहाँ वे ठहरे रहे।

(3) प्रेरितों को ऊपर से सामर्थ मिलनी थी (लूका 24:49)। प्रेरितों 2:1-4 में हम इस प्रतिज्ञा के पूरा होने के बारे में पढ़ते हैं। "जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दी; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे" (प्रेरितों 2:1-4)। पवित्र आत्मा ने आना था और हम देखते हैं कि वह पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में आया भी।

(4) अन्त के दिनों में प्रभु का वचन यरूशलेम से निकलना था (यशायाह 2:2, 3; मीका 4:1, 2)। प्रेरितों 2:1-4 में हमें यह भविष्यवाणी पूरी होती मिलती है, जहाँ यरूशलेम में एक सामर्थपूर्ण संदेश सुनाया गया। यह अंत के दिनों में हुआ; क्योंकि इस बात के प्रमाण के रूप में कि यह अंत के दिनों में होने वाली बात थी, पतरस ने योएल की भविष्यवाणी उद्धृत की (योएल 2:28-32)। इस कारण यह सही स्थान और सही समय था।

(5) प्रभु के नाम में मन फिराव तथा पापों की क्षमा का प्रचार यरूशलेम से आरंभ होना था (लूका 24:47)। पतरस ने यह कहते हुए कि "मन फिराओ, और

तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले..." ऐसे ही इस संदेश को सुनाया (प्रेरितों 2:38)।

(6) यहोवा का भवन (कलीसिया) अंत के दिनों में यरूशलेम में बनाया जाना था (यशायाह 2:2, 3; मीका 4:1, 2; जकर्याह 1:16)। और यह तभी और वहीं पर बनाया गया था। यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के दिन, जिन्होंने सुसमाचार को सुना, उन्होंने विश्वास से मन फिराया और बपतिस्मा लिया और उन्हें इसमें मिला लिया गया, "जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए" (प्रेरितों 2:41)। इस अध्याय की सैंतालीसवीं आयत में हम पढ़ते हैं कि प्रभु उन्हें कलीसिया में मिलाता था। यह अंत के दिनों में ही हुआ, क्योंकि पतरस ने किसी बाद के प्रमाण के लिए कि वह अन्त के दिनों में होनी थी, योएल की भविष्यवाणी को उद्धृत किया था (प्रेरितों 2:17-21)। प्रेरितों के काम 2 अध्याय में इस अवसर के आरंभ से हम कलीसिया को एक वास्तविकता के रूप में पाते हैं, जबकि इससे पहले इसे भविष्य में होने वाले संस्थान के रूप में बताया गया था। सो भविष्यवाणियों तथा उनके पूरे होने के अनुसार, मसीह की कलीसिया का आरंभ यरूशलेम में ही हुआ था। यही तो वह कलीसिया है, जिसका मैं सदस्य हूं।

4. किसी भी समाज और युग में उसी कलीसिया का बोया जाना कलीसिया के निरंतर बनते रहने के बजाय उसी बीज को बोने पर निर्भर करता है: (1) कलीसिया के निरनतर बनते रहने में कुछ लाभ नहीं मिलता। यदि कोई किसी संस्थान की स्थापना के बारे में पीछे से पीछे जाते हुए पता भी लगाए तो उसे ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलेगा कि इससे मिलता-जुलता कोई संस्थान आरंभ में था। कई वर्षों बाद, कोई कलीसिया विश्वास से इतनी भटक सकती थी कि वह सच्ची कलीसिया रहे ही न। पौलुस ने कहा कि विश्वास से भटकना या गिरना होना था। कृपया कुछ वचनों को पढ़ें: (1) "मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड़ को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे" (प्रेरितों 20:29, 30)। (2) "हे भाइयो, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इक्ट्ठे होने के विषय में तुम से विनती करते हैं। किस किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुंचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए, और न तुम घबराओ। किसी रीति से किसी के धोखे में न आना, क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात विनाश का पुत्र प्रकट न हो। जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मंदिर में बैठकर अपने आप को परमेश्वर प्रकट करता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:1-4)। (3) "परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट

के कारण होगा, जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है। जो ब्याह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे" (1 तीमुथियुस 4:1-3)। ऊपर दिए गए हवालों से स्पष्ट होता है कि विश्वास से हटने वाली कलीसिया सच्ची कलीसिया से दूर हो जानी थी; इसलिए कोई कलीसिया, जिसकी स्थापना पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में नहीं हुई मिलती है, वह विश्वास से गिरने वाली कलीसिया हो सकती थी। इस कारण कलीसिया के निरंतर बनते रहने को साबित करने का प्रयास करने वाले तभी सफल हो सकते हैं यदि वे विश्वास से भटकने वाली कलीसिया के सदस्य है।

(2) अच्छा होता यदि हमारी दिलचस्पी यह देखने में हो कि हम वही बीज बो रहे हैं, जो प्रेरितों ने बोया था। बीज बोने वाले के दृष्टांत में हमें बताया गया है कि परमेश्वर का वचन राज्य का बीज है (लूका 8:11)। यदि हम वही बीज बोते हैं, जो प्रेरितों ने बोया था, तो वही कलीसिया निकलेगी, "क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा" (गलातियों 6:7)। हर बीज अपनी ही नस्ल के अनुसार फल लाता है। मक्का बोने पर आपको मक्का ही मिलेगी; गेहूं बोने पर आप गेहूं को काट सकते हैं; कपास बोने से कपास ही पैदा होगी; राज्य का शुद्ध वचन बोने पर सच्ची कलीसिया ही निकलेगी। जब राज्य का बीज पहली शताब्दी में बोया गया था तो इसमें से "डिनोमिनेशनें" या साम्प्रदायिक कलीसियाएं नहीं बनी थी। अर्थात कोई यह नहीं कहता था कि मैं कैथोलिक हूं या पैंटिकॉस्टल। न ही राज्य का बीज बोने पर आज ऐसा फल मिल सकता है। इसलिए हमें यह मानना होगा कि ऐसे फल केवल इसलिए है, क्योंकि राज्य के बीज के अलावा कुछ और बीज बो दिए गए हैं। परमेश्वर का वचन अर्थात राज्य का बीज बोने पर केवल मसीही ही बनते हैं, यानी दूसरे सब फल किसी और बीज का परिणाम है।

(3) अब हम समझाते हैं: संसार भर से यदि बढ़ने वाले गेहूं को नाश कर दिया जाए, तो भी बीज रहने तक उसे नाश नहीं किया जा सकेगा। बीज को बो कर उससे और फल लिया जा सकता है, जो हर प्रकार से उस मूल बीज से मेल खाता होगा, जो बोया गया था। इसी प्रकार मुझे यह सुझाव देने दें कि यदि सच्ची कलीसिया की सभी बढ़ती मण्डलियों को विश्वास से फिरने या सताव के द्वारा नाश कर दिया जाए और एक हजार वर्ष तक दबा दिया जाए, तो भी प्रभु की कलीसिया तब तक नष्ट नहीं होगी, जब तक परमेश्वर का वचन अर्थात राज्य का बीज रहेगा और यह बीज सदा तक स्थिर रहेगा, क्योंकि यीशु ने कहा है, "आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी" (मरकुस 13:31)। किसी भी समाज में इसी बीज को बोकर हम चेलों की एक मण्डली बो सकते हैं, जो हर प्रकार से मूल चेलों से मिलती-जुलती होगी। मसीह की कलीसिया का आरंभ यरूशलेम में हुआ था, पर वही सुसमाचार सुनाकर किसी भी नगर या समाज में उसी कलीसिया का आरंभ किया जा सकता है। यरूशलेम में प्रभु की कलीसिया के बनने के कुछ साल बाद, पौलुस ने कुरिन्थुस में जाकर वहाँ इसे लगाया था। उसने कहा, "मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया" (1 कुरिन्थियों 3:6)। वही संस्थान

जो कुरिन्थुस में लगाया गया था, संसार के किसी भी भाग में किसी भी समय लगाया जा सकता है, यदि सावधानी से उसी बीज को बोया जाए। हमारी मुख्य दिलचस्पी इसी में होनी चाहिए।

प्रचार करना एक बड़ा ही विशाल और अनन्त महत्व का काम है

चार्ल्स स्कॉट

सुसमाचार के प्रत्येक प्रचारक को यह जानना चाहिए कि वह परमेश्वर का जन है, और उसके पास परमेश्वर का वह संदेश है जो पाप में खोए हुए संसार के लिये आशा और जीवन का स्रोत है। कैसा विशाल कार्य है यह, और एक जिम्मेदारी का काम भी है। परमेश्वर चाहता है कि हम अपनी प्रत्येक योग्यता और हर एक अवसर को उसकी महिमा और दूसरों की भलाई के लिये इस्तेमाल करें। जो लोग परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करते हैं, वे जगत में थके-हारे मनुष्यों को ईश्वर के सुख-चैन का संदेश दे रहे हैं। और संसार को इससे अधिक और किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं है। हमारा संदेश अब और हमेशा के लिये आनन्द का संदेश है।

परमेश्वर, आत्मा को बचाने वालो अपने संदेश को प्रचार के माध्यम से जगत के सब लोगों तक पहुंचाना चाहता है। जो लोग परमेश्वर की इस योजना को ठीक से नहीं समझते, वे सोचते हैं कि परमेश्वर को अपना संदेश प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं देना चाहिए, या पवित्रात्मा या स्वर्गदूतों के द्वारा लोगों के मनों में कार्य करना चाहिए। किन्तु 2 कुरिन्थियों 4:3-7 के द्वारा हमें यह शिक्षा मिलती है, कि परमेश्वर अपने इस कार्य को "मिट्टी के बरतनों" के द्वारा पूरा करना चाहता है। यहां, मैं कुछ हवाले बाइबल से दूंगा जो प्रचार करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं: 1 कुरि. 1:21 में लिखा है "...परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे।" तीतुस 1:3 के अनुसार, परमेश्वर ने "अपने वचन को प्रचार के द्वारा प्रकट किया।" रोमियों 1:16 में लिखा है, "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये - उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।" रोमियों 10:14, में कुछ बड़े ही अहम प्रश्नों पर ध्यान दिलाया गया है, "फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम क्यों कर लें? और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्यों कर विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्योंकर सुनें? और फिर आगे यहाँ इस प्रकार लिखा है, "कि उनके पांव कितने सोहावने हैं, जो अच्छी बातों का सुसमाचार सुनाते है।" सो, यह कितना अच्छा काम है और कितनी गंभीर जिम्मेदारी है।

सुसमाचार के प्रचारक आत्माओं की कटनी के काम में परमेश्वर के सहकर्मी है। यीशु ने कहा था, "काटने वाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता

है।" (यूहन्ना 4:36)। जब वचन के प्रचार करने से मन फिराव उत्पन्न होता है, तो "स्वर्ग में आनन्द मनाया जाता है।" और जब कोई मन फिराकर बपतिस्मा लेता है तो उसे आनन्द मिलता है। (प्रेरितों 8:38-39 तथा 16:33-34)। सो, स्वर्ग में और उद्धार पाए हुए मनुष्यों के मनों में आनन्द होता है, और ऐसे ही प्रचारक के मन में आनन्द होता है। आनन्द ही आनन्द और फिर कुछ ही समय पश्चात एक अनन्त आनन्द।

निम्नलिखित बातें प्रचार के महत्व को दर्शाती है

यह एक ऐसा महत्व का काम है जिसके द्वारा हम उन लोगों को परमेश्वर के सही मार्ग की शिक्षा देते हैं जो उसी की समानता पर और उसी के स्वरूप पर बनाए गए हैं। हमारे सृष्टिकर्त्ता ने न केवल हमें बनाया ही है, पर उसने हमें यह भी बताया है कि वह हम से कया चाहता है, और हमें इस पृथ्वी पर अपने-अपने जीवनों को किस प्रकार उसकी इच्छा पर चलकर व्यतीत करना चाहिए। सो हमें उसकी इच्छा को जानने की आवश्यकता है। और यही एक प्रचारक का काम है। अर्थात् लोगों को परमेश्वर की इच्छा से परिचित करवाना।

जब हम इस बात को अनुभव करते हैं, कि प्रचार के द्वारा लोगों के भविष्य के अनन्त जीवन पर, असर पड़ता है, तो हम प्रचार करने के अनन्त महत्व और गंभीर उत्तरदायित्व को समझ सकते हैं। पृथ्वी पर हर एक इंसान समय के एक ऐसे दौर से होकर गुजर रहा है जो उसे एक अनन्त स्थान पर पहुंचाएगा। प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि मार्ग दो प्रकार के हैं, और ऐसे ही रहने के दो अनन्त स्थान हैं। प्रभु ने एक "सकरे मार्ग" के विषय में बताकर कहा था, कि वह "जीवन" को पहुंचाता है, और एक "चौड़ा मार्ग" है, जो "विनाश" को पहुंचता है। (मत्ती 7:13, 14)। जो लोग प्रचार का काम करते है उनके पास एक सुन्दर अवसर है लोगों को स्वर्ग के बारे में और वहाँ किस तरह से जाया जा सकता है इसके बारे में बताने के लिये।

प्रचारक होने के नाते जब हमें यह पता चलता है कि हमारे प्रचार का क्या असर होता है तो हमें इस बात से खुशी होती है। मैं कुछ ही समय पूर्व दो व्यक्तियों से मिला था, जिन्हें मैंने 42 वर्ष पूर्व बपतिस्मा दिया था। उन्होंने मुझ से जब यह कहा कि, "यदि आप हमें नहीं बताते, तो हमारे पास स्वर्ग में प्रवेश पाने की आशा नहीं होती" तो यह सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई। और भी कुछ लोगों ने अकसर मुझसे कहा है कि "हम बड़े ही दुखी और परेशान थे, पर आपने हमें परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताकर हमें यह सिखा दिया कि वह हमारे दुखों में हमारी सहायता करेगा। और हमारे पास हियाव है।" ऐसी बातें सुनकर मुझे खुशी मिली, कि मैं एक प्रचारक हूं।

मसीह और उसकी शिक्षाओं को सुनकर लोगों के जीवनों में बदलाव आता है, और उन्हें यह समझने में सहायता मिलती है कि वे स्वर्ग को अपना सदा का घर किस प्रकार बना सकते है। प्रभु यीशु ने कहा था, कि "मैं जगत की ज्योति हूं, जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में नहीं चलेगा।" (यूहन्ना 8:12) जीवन बदल जाते हैं। घरों में प्रसन्नता आ जाती है। और जीवन के सुखों और दुखों में परमेश्वर की आशीष का साया रहता है। (रोमियों 8:28-38)। सचमुच में मसीही होना एक बड़ी ही विशाल बात है। और यह भी बड़ी ही सुन्दर बात है जब हम अन्य लोगों को मसीह के पास

लाते हैं। यदि परमेश्वर ने हमें अपने वचन को प्रचार करने के योग्य समझा है, तो हम पौलुस की तरह कह सकते हैं, "और मैं, अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिसने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूं, कि उसने मुझे विश्वास योग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया।" (1 तीमुथियुस 1:12)।

पाप की समस्या के समाधान

(1 यूहन्ना 1:5-2:2)

कोय रोपर

ढांचे के भीतर निरंतर शुद्धि देता रहता है.....।

मसीही बनने पर जीवन की समस्याओं से पीछा नहीं छूट जाता। मसीही लोग बीमार होते है और मरते हैं। उनकी नौकरी छूट जाती है या उनका कारोबार ठप्प हो जाता है। निजी संबंधों में उन्हें निराशा मिलती हैं। उनकी भी पारिवारिक समस्याएं होती हैं। परन्तु मसीही व्यक्ति की सबसे बड़ी समस्या उसके स्वयं की समस्या, आर्थिक समस्या या पारिवारिक समस्या नहीं है। यह पाप की समस्या है।

मसीही व्यक्ति को उद्धार मिला है। यीशु में विश्वास करने (यूहन्ना 8:24), अपने पापों से मन फिराने (लूका 13:3), अपने विश्वास का अंगीकार करने (1 तीमुथियस 6:12), और मसीह में बपतिस्मा लेने (गलातियों 3:27) पर उसे अपने पापों की क्षमा मिली है (प्रेरितों 2:38)। यहीं पर उसे नया जन्म मिला यानी उसे प्रभु की कलीसिया में मिलाया गया यानी उसका उद्धार हुआ।

इसके बावजूद मसीही व्यक्ति पाप करता है। चाहे उसे पाप से उद्धार मिला था, परन्तु उसका उद्धार उसे पाप करने से दूर नहीं रखता। पाप की समस्या लगातार उसे सताती रहती है। "पाप की समस्या" का समाधान वह तीनों में से एक ढंग को करने की कोशिश करते हैं: (1) वह निर्णय ले सकता है कि वह अभी भी पाप करता है इसलिए उसका उद्धार हुआ ही नहीं। वह संसार में या तो वापस जा सकता है या दोबारा बपतिस्मा लेकर फिर उद्धार की तलाश कर सकता है। (2) वह यह निर्णय ले सकता है कि वह बिना पाप किए रह नहीं सकता इस कारण उसे मसीही बनने का ही विचार को ही त्याग देना चाहिए। वह अपने आप को इतना कमजोर, इतना निकम्मा समझकर "निकल जाता जाए" कि वह परमेश्वर की संतान होने के योग्य नहीं है। (3) वह निर्णय ले सकता है कि वह पाप करना तो छोड़ेगा नहीं इसलिए उसे इसकी चिंता छोड़कर आनन्द करना चाहिए। इस प्रकार वह पाप में जीवन बिताते रहकर मसीही बना रहेगा।

इनमें से कोई भी वास्तविक समाधान नहीं है। परन्तु बाइबल सहायता उपलब्ध कराती है। विशेषकर 1 यूहन्ना 2:1, 2 में इसके संदर्भ के साथ पाप की समस्या

का समाधान यूहन्ना द्वारा दिया जाता है। वह पाप और मसीही के संबंध में हर बातें बताता है।

मसीही लोगों को पाप नहीं करना चाहिए

यूहन्ना कहता है, "हे मेरे बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं कि तुम पाप न करो" (1 यूहन्ना 2:1)। (1 यूहन्ना 2:15, 16; गलातियों 5:19-22; रोमियों 6:12-14 भी देखें)।

यूहन्ना के पाठकों को इस संदेश को समझने की आवश्यकता थी। स्पष्टतया उनमें से कुछ ने एक विधर्म को स्वीकार कर लिया था जिसके आरंभिक चरणों में नॉस्टिकवाद के रूप में जाना जाता था। नॉस्टिकवाद के कई रूप थे। परन्तु सब में एक बात सामान्य थी कि उनका मानना था कि शरीर और इससे जुड़ी हर बात बुरी है; परन्तु आत्मा और इससे जुड़ी हर बात अच्छी है।

धर्मशास्त्रीय रूप में इससे नॉनिस्टकवादियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि यीशु देह में परमेश्वर नहीं हो सकता था। आत्मा होने के कारण परमेश्वर सचमुच में इतना अच्छा है कि वह पाप से भरी देह में यानी बुराई में वास नहीं कर सकता। इस कारण वे कहते होंगे कि मसीह केवल शरीर में दिखाई दिया। (देखें 1 यूहन्ना 4:2, 3)।

नैतिक रूप में ऐसा ही विश्वास नॉस्टिकवादियों को दो विपरीत दृष्टिकोणों तक ले गया। कुछ यह तर्क देते थे कि शरीर एक बुराई है इसलिए मसीही व्यक्ति का काम शरीर का इंकार करना या यहाँ तक कि इसे बिगाड़ना है। ये लोग अपने आप को बर्फीले मौसम में नंगे रखते, भूखा रहते या पत्थरों से बेधते थे। दूसरे चरम पर कुछ लोग ऐसे थे जो यह बहस करते थे कि शरीर वास्तव में उस आत्मा को जो उस शरीर में रहती है किसी प्रकार प्रभावित नहीं कर सकता। सो उनका मानना था कि मसीही व्यक्ति को जैसे चाहे वैसे जीना चाहिए यानी शराबी, पेटू या व्यभिचारी बनकर और इससे किसी को दुख नहीं होता। आखिर आत्मा तो परमेश्वर के इतना निकट है कि शरीर को चाहे जो भी हो जाए, वह अच्छी ही रहती है।

लगता है कि यूहन्ना के कुछ पाठक इस दृष्टिकोण को मानने लगे थे क्योंकि यूहन्ना लिखता है: "...परमेश्वर ज्योति है: और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं। यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अंधकार में चले, तो हम झूठे हैं: और सत्य पर नहीं चलते" (1 यूहन्ना 1:5, 6)।

वे कहते हैं, "हमारी परमेश्वर के साथ सहभागिता है। हमें अनैतिकता से वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि हमारी आत्माएं तो शुद्ध है।" यूहन्ना ने उत्तर दिया, "तुम जीता जागता झूठ हो। जब तक तुम्हारा जीवन उसके स्वभाव और उसके वचन के विपरीत है तब तक परमेश्वर के साथ तुम्हारी सहभागिता नहीं हो सकती। यदि तुम्हारे काम शुद्ध नहीं है तो तुम्हारी आत्मा शुद्ध नहीं है।"

शायद हमें भी इस संदेश की आवश्यकता है कि हम पाप न करें। कुछ मसीही लोग जानते हैं कि वे पाप करते हैं परन्तु वे अपने पापों पर कंधे उचकाते हुए कहते हैं: "मैं जानता हूं कि मैं जब गुससे में होता हूं तो मेरे मुंह से गलत निकल जाता है, परन्तु क्या करूं मैं ऐसा ही हूं", "हां, मैं काफी आपे से बाहर हो जाता हूं और कई बार मैं उसी को मार देता हूं जिसने मुझे क्रोध दिलाया हो, परन्तु तुम जानते हो कि हम जल्दी गुस्सा करने वाले लोग कैसे होते हैं।" जब मसीही लोग ऐसी बातें करते हैं तो वे कह रहे होते हैं कि वे पाप करते हैं और इसे जानते हैं, परन्तु पाप करना छोड़ने की उनकी कोई मंशा नहीं है। उन मसीही लोगों को यह समझ लेना आवश्यक है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि वे पाप करें।

1 यूहन्ना 1:5, 6 भी बताता है कि मसीही होने के नाते हमें पाप क्यों नहीं करना चाहिए। यूहन्ना कहता है कि हमारे लिए जिनकी परमेश्वर के साथ सहभागिता है, जो ज्योति है, अंधकार या पाप में चलना सही नहीं है।

हम उपयुक्त व्यवहार की अवधारणा को समझ सकते हैं। कल्पना करें कि देश का राष्ट्रपति किसी बाहरी देश के प्रमुख के साथ आ रहा है। राष्ट्रपति का जहाज किसी ठहराव पर रूकता है। लाइट जहाज के दरवाजे पर पड़ती है; सीढ़ियां दरवाजे तक जाती हैं; बैंड बजता है "प्रधान की जय हो"। दरवाजा खुलता है और राष्ट्रपति बाहर आता है, राष्ट्रपति उछलकर जंगले से नीचे आता, कुछ पहियों को घुमाता और हास्यसपद ढंग से विदेशी अतिथि के कदमों में गिरकर कहता है, "नमस्कार" वास्तविकता तो यह है कि हम ऐसे कार्य करने की कल्पना राष्ट्रपतियों से नहीं कर सकते। ऐसा व्यवहार उस पर बैठे व्यक्ति के लिए उपयुक्त नहीं है।

जब कोई बच्चा कलीसिया में आता और अंगूठा चूसता है, या अपना कंबल नाक में घुसेड़ता है और आराधना के दौरान जोर-जोर से चिल्लाने लगता है तो हम इस पर ध्यान नहीं देते। आखिर बच्चों से ऐसी ही व्यवहार की उम्मीद की जाती है। परन्तु यदि कोई पचास साल का आदमी अंगूठा मुंह में डाले, नाक में कंबल घुसड़ते हुए जोर से चिल्लाने लगे तो हम ध्यान देंगे, "यह तो अलग ही है; कुछ गड़बड़ है।" बड़े लोग ऐसा काम नहीं करते। बच्चे के लिए जो व्यवहार उपयुक्त है वह बड़े के लिए उपयुक्त नहीं है।

यूहन्ना यहाँ कुछ ऐसा ही कह रहा है कि मसीही लोगों को पाप नहीं करना चाहिए क्योंकि जिसकी परमेश्वर के साथ सहभागिता है उसके लिए पाप करना उपयुक्त नहीं है। यदि आप दूसरों को कारण देने की तलाश में है कि आप उनके साथ पाप करने में शामिल क्यों नहीं होते तो उसका कारण यह है: मसीही लोग बस ऐसे काम नहीं करते। पाप मसीही व्यक्ति के व्यवहार से मेल नहीं खाता।